International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 1; January 2018; Page No. 34-36

"धार" उपन्यास में आदिवासी जीवन का यथार्थ

[1] Dr. P Ganesan, [2] Anjana AS
[1] Associate Professor, Nehru Arts and Science College, Coimbatore, Tamil Nadu, India
[2] M.Phil Hindi Research Scholar, Nehru Arts and Science College, Coimbatore, Tamil Nadu, India

सारांश
हिंदी कथाकार संजीव का "धार" (१९९०) एक ऐसा ही उपन्यास है, जो बिहार पहले, अब झारखंड राज्य के एक आदिवासी जीवन और समाज (संथाल परगना) की वास्तविकता को पूरी सिद्दत से उभारता है I आदिवासियों के शोषण, संघर्ष और उनके जीवन की चुनौतियों के साथ उनके जेहन में पल रहे सपनों को भी स्वर देता है I संजीव का यह उपन्यास (धार) तमाम नामचीन लोगों के साथ संथाल परगना के वासियों को समर्पित है, जो उनके कथाकार की आदिवासी जीवन-समाज में होने वाली गहरी सम्पृक्ति को बताता है I

मूल शब्द : "धार", आदिवासी जीवन, समाज (संथाल परगना)

प्रस्तावना

संजीव जी को वर्तमान हिंदी साहित्य जगत में एक सशक्त एवं सर्व प्रमुख कथाकार के रूप में जाना जाता है I संजीव जी ने प्रमुखतः अपनी 'अपराध' कहानी और 'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास के कारण प्रकाश में आए, और सर्वोपरि ख्याति प्राप्त कीI उनकी पहचान हिंदी साहित्य में एक अलग अहमियत रखती है I उन्होंने कहानी, नाटक , उपन्यास तथा यात्रा वृत्तांत आदि विधाओं में लेखन किया है I यह उल्लेखनीय है कि साहित्यकार संजीव की दृष्टि सीमित नहीं है I वह व्यापक सन्दर्भों से जुडी हुई है, जिसमें उनकी रचनात्मक के विविध आयाम दर्शनीय हैं I सामाजिक वर्ग- भेद के परिप्रेक्ष में संजीव का कथा-साहित्य महत्वपूर्ण है I

संजीव के कथा-साहित्य में दलित, निम्नवर्ग और आदिवसियों के शोषण का यथार्थ अंकन मिलता है I उन्होंने अपने कथा-साहित्य में निम्नवर्ग, दलित , आदिवासी तथा नारी का जीवन और उसके विद्रोह को पूरी क्षमता और यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया है I अपने साहित्य के माध्यम से उन्होंने सामंतवाद तथा पूँजीवाद का मार्मिकता के साथ व्यग्यात्मक शैली में विरोध किया है I काल मार्क्स के विचारों का गहरा प्रभाव उनपर परिलक्षित होता है I इसी कारण उनके साहित्य में शोषकों के प्रति हमेशा ही घृणा की भावना तथा शोषितों के प्रति दया एवं सहानुभूति रही है और शोषकों के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा देनेवाली भावना दिखाई देती है I संजीव के कृतित्व को जानने से पहले हमें उनके व्यक्तित्व को जानना ज़रूरी है क्योंकि हर एक साहित्यकार के साहित्य पर उसके अपने जीवन एवं परिवेश का असर होता ही है I कोई भी संवेदनशील साहित्यकार इन बातों से अछूता नहीं रह सकता I इसलिए सबसे पहले यहाँ हम संजीव के जीवन, व्यक्तित्व तथा साहित्य का परिचय पाना आवश्यक समझते हैं I उन्होंने अपने कथा-साहित्य में प्रधान एवं प्रमुख विषय के रूप में दलित, आदिवासी तथा निम्नवर्ग को केन्द्र में रखा है I उनकी दृष्टि शोषित, पीड़ित तथा दलित समाज पर टीकी हुई दृष्टिगोचर होती है I

उपन्यासकार संजीव ने पिछड़े हुए बाँसगड़ा गाँव को आलोच्य उपन्यास की कथा को केन्द्र बनाकर वहाँ के उपेक्षित जीवन के प्रश्नों, आकांक्षाओं, शोषण, भ्रष्टाचार, गरीबी, अशिक्षा एवं असुन्दरता का अंकन करके इन सबके बीच मानवीय संवेदना की छवि को उभार कर उधर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है I कोयला खदान की सही तस्वीर और आदिवासियों का जीवन इस कृति के उल्लेखनीय संदर्भ हैं I कोयला खदानों से सटकर बसे बाँसगड़ा गाँव की मूर्त तस्वीर लेखक द्वारा निर्मित हुई है I लेखक लिखता है – "उत्तर- पूरब की दिशा में चिमनी से उजला-उजला धुआँ निकल रहा था, पुराने टीनों की घेराबंदी मरियल पैंडा के बीच टूट-टूटकर जुडी हुई सी I अगल-बगल ज्यादातर फूस के घरौंदे नज़र आ रहे थे I"[१] गाँव अपने-आप में स्वतंत्र हुआ करते हैं I जब कभी गाँव में मजदूरों का काम नहीं मिलता तो वे लोग दूसरे गाँव जाकर काम तलाशते हैं I मैना भी अपने गाँव को छोड़कर धान रोपने के लिए दूसरे गाँव जाती है I बाँसगड़ा की कोयला खदानों और कारखानों के परिणामस्वरूप बाँसगड़ा के हर्द-गिर्द लगे गाँवों पर भी काले साये मंडराते रहते है I

तेजाब की फैक्ट्री यानि 'धार' उपन्यास का जहरीला परिवेश, एक तरफ तेजाब की फैक्ट्री ऊपर से सूर्य की तेज किरणें माने आग में जलता बाँसगड़ा स्वयं अपने आपको बचाने के लिए पुकार रहा हो I मानव जाति को नपुंसक बनाने वाला तेजाब I तेजाब के कारण वहाँ की हरी-भरी ज़मीन भी बंजर बन जाती है I वहाँ की हवा, पानी, पेड़, पौधे, लोग यहाँ तक की जब कभी बारिश होती है तो बारिश के पानी की जगह तेजाब बरसता है I बारिश की ऋतु में बारिश में नहाने के लिए लोग घर में से बाहर निकलते हैं, किन्तु बाँसगड़ा के लोग बारिश की ऋतु में बारिश आते ही भाग-म-भाग करके घर के भीतर चले जाते हैं I मैना कहती है "हमरा सितवा, टिपका और लुत्ता कहाँ है ?' एक हाथ से तेजाब की बारिश से छरछराती देह को खुजलाती और दूसरे हाथ से कोयले की टोकरी थामे मैना अपने बच्चे को ढूँढती हुए भागी आ रही थी I"[२] वहाँ के वातावरण में नमी की जगह तेज धूप और जहर मिला हुआ रहता है I मैना डिब्बे में जाकर भी परेशान है I क्योंकि गर्मी के कारण डिब्बा भी तवा की तरह तपता है I एक तो तेजाब ऊपर से सूर्य की कड़ी धूप क्या करें लोग कपड़ा तो ठीक चाहते हैं कि खाल खींचकर फ़ेंक दे I वहाँ के लोग अपने पेट की आग को शान्त करने केलिए खींचकर फ़ेंक दे I वहाँ के लोग अपने पेट की आग को शान्त करने केलिए खाना तो नहीं प्राप्त कर सकते साथ-साथ में पानी का प्रश्न भी जटिल हुआ करता है I कुएँ, तालाब की फैक्ट्री ने पूरे बाँसगड़ा में जहर घोल दिया है I सबको लूला, लंगड़ा, अपाहिज और रोगी बना दिया है I

प्राकृतिक परिवेश बिल्कुल प्रदूषित हो जाता है I गाँव की खेती- बाडी नष्ट हो जाती है I गाँव के किसान लोग किसान न रहकर मजदूर बन जाते हैं I धूप और धुएँ में जलती बस्तियाँ, अंधनंगे बच्चे, दमघोटू वातावरण, खाँसते लोग, मरियल कुत्ते की

तरह पेड़ और गंदगी का यहाँ साम्राज्य है I "न दिन है, न रात, दोनों की दहलीज पर संथाल परगना का पूरा नंगा इलाका घायल गुरते सूअर की तरह पड़ा है I नंगी, अंधनंगी पहाड़ियाँ जहाँ-तहाँ खड़े शाल, महुए, खजूर और ताड के पेड़ झाड़ियाँ, बलुई बंजर धरती, सूखती नदियाँ, सूखते कुएँ, तालाब, भयंकर पोखरियाँ खादें, जहाँ-तहाँ सोये पड़े मुर्दों से लोग I"[३]

उपर्युक्त चित्रण कोयला खदानों का परिवेश मूर्त करता है I इसी के परिणाम स्वरूप आदिवासियों को हेय कोटि का जीवन जीना पड़ता है I सुबह से लेकर शाम तक गहरी खदानों में कड़ी मेहनत करने के बावजूद भी उन्हें दो वक्त की रोटी मयस्सर नहीं होती I उनके नसीब में शायद सुख न लिखा हो I गरीबी, भुखमरी यही संथालों के जीवन का यथार्थ है I वे लोग शिक्षा से दूर हैं I अशिक्षित होने के कारण उन में डायन, जादू टोना, भूत, प्रेत, बलि प्रथा, तंत्र-मंत्र, भाग्य विधाता और ओझा का आतंक पाया जाता है I धर्म परिवर्तन की कथाएँ उनके समाज में बार-बार उत्पन्न होती हैं I मूलत: वे लोग अत्यन्त गरीब होते हैं I ईसाई धर्म प्रचारक उनकी गरीबी का लाभ उठाकर उन्हें ईसाई बनाते हैं I धर्म परिवर्तन के कारण स्वाभाविक है कि उनके धार्मिक जीवन में हल-चल मची रहती है I प्रस्तुत उपन्यास में बधना, सरहूल, करमा लोकगीत और लोकनृत्य के धुंधले चित्र मिलते हैं I उन लोगों के अभाव और शोषण ने तो मानो लोक संस्कृति का रस चूसकर उसे अपाहिज बनाया है I पर्व का मतलब उल्लास और जोश होता है, किन्तु उपर्युक्त सारे कारणों से पर्वों में उल्लास और जोश नहीं मिलता I

आदिवासी जीवन संबंधी उपन्यास साहित्य में सामाजिक परिवेश अत्यंत महत्वपूर्ण होता है I सामान्यत: उसके अंतर्गत स्त्री-पुरुष के संबंध, पारिवारिक संबंध, जाति व्यवस्था, पंचायत, रीति-रिवाज़ आदि का उल्लेख होता है I

प्रस्तुत 'धार' उपन्यास में बाँसगड़ा के आदिवासियों की पंचायत का सशक्त रूप हमें प्राप्त होता है I उपन्यास की नायिका मैना सौंताल आदिवासी युवक फोकल की पत्नी है I गाँव में पूँजीपति महेन्द्र बाबू द्वारा स्थापित तेजाब की फैक्ट्री का विरोध करने पर उसे जेल जाना पड़ता है I जेल में जेलर द्वारा मैना पर बलात्कार किया जाता है I परिणाम स्वरूप मैना को बच्चा पैदा होता है I जेल से रिहा होने पर मैना अपना बच्चा तथा सोनार युवक मंगर को लेकर अपने गाँव बांसगड़ा में आती है I गाँव की पंचायत में यह तय करना था कि क्या मैना सौंताल समाज में रह सकती है ? क्योंकि जो स्त्री अपने पति के होने पर भी पराये मर्द के साथ रहे तो उस स्त्री का जीते जी श्राध्द कर देना चाहिए यह सौंताल आदिवासियों की परम्परा है I किन्तु बिना लोबीर बुलाये फोकस, किस्कू, टेंगर, टुडू और अन्य सौंताल आदिवासियों द्वारा लोबीर परम्परा का उल्लंघन करके मैना का श्राध्द किया जाता है I फोकल और टेंगर ने लोबीर की उपेक्षा की है जिसके कारण लोबीर बैठती है और लोबीर में सर्वसम्मत निर्णय लिया जाता है कि फोकल, किस्कू, टेंगर, टुडू और जिन सौंतालों ने लोबीर की उपेक्षा कर बिना हमारी राय लिये मैना का श्राध्द किया है, उन्हें लोबीर इसी दस से जातिच्युत करती है I मैना की मजबूरी को ध्यान में रखते हुए उसके कसूर माफ कर उसे पुनर्विवाह की इजाजत देती है I मंगर को पहले विवाह के खर्चस्वरूप सौ रुपये फोकल को देने होंगे I फोकल के जातिच्युत होने के कारण फोकल और मैना से जन्मे बच्चे भी मैना के हुए I समाज के कड़े रिवाजों के अलावा उन लोगों में कुछ सामाजिक दब्बूपन भी हुआ करता है I जेल में जेलर द्वोरा मैना पर बलात्कार की घटना को मैना द्वोरा सहज रूप में स्वीकारना मैना और मैना के समाज का दब्बूपन हैI मैना जानती है कि मानवलोजी भेड़िया के सामने खरगोश कुछ नहीं कर सकती I आदिवासी जीवन से जुड़े हिंदी उपन्यासों की तुलना में 'धार' उपन्यास की सामाजिकता कुछ अलग किस्म की है I सौंताल आदिवासियों में शारीरिक संबंध समाज के सामने जितने खड़े होते हैं उतने ही समाज से दूर एकांत में स्वच्छंद हुआ करते हैं I पेट की आग को शान्त करने केलिए रात के एकांत में ट्रक-ड्राइवरों के साथ अपना शरीर बेचकर कुछ कमाना वे लोग अपना कर्तव्य समझते हैं I प्रस्तुत उपन्यास में एक रात मैना को इस बात का अनुभव होता है – "एक ट्रक की ओट से उसने देखा कि झोंपड़ी से तुरिया निकली I तुरिया और यहाँ ? और वह आदमी इसे पैसा क्यों दे रहा है ? दूसरी झुग्गियों की गैस की रोशनी में उसे एक गुल गुलिया लड़की शोभा दिख गई उसके साथ एक सौंताली लड़की भी थी, दोनों नशे में धुत्त I एक चिनगारी-सी चिरचिराई I तो इसका मतलब यह हुआ कि आसनशील, लक्ष्मीपुर की तरह यहाँ भी रात को चकला चलने लगा I"[४]

एक और अपनी माटी को बचाये रखने के लिए शरीर बेचती बांसगड़ा की स्त्रियाँ है तो दूसरी तरफ मैना जैसी I मैना को भी उन भूखे भेडियों ने नहीं छोड़ा I अपने पति फोकल के अलावा मंगर, जेलर, पंडित सीताराम जाने कितने मर्दों ने उसे नोचा है I समाज के चरित्रसम्पन्न लोगों की आँखों में मैना भोग का साधन थी I एक बार रात के वक्त बबन मौक का लाभ उठाकर मैना को पकड़ लेता है किन्तु मैना बबन को ऐसा सब सिखाती है कि बबन उस माँ तक बोल देता है –"उसके मुँह से निकल पड़ा 'मादरचोद' I इसके साथ ही उस दारू से चर्बियाये हाथ की कलाईयाँ उसकी मूठ में आकर कड़क हो उठी I दर्द से बिलबिला कर वह जवान कुत्ते - सा काँय - काँय करने लगा 'अरे बाप रे !' छोड़ दो, टूट जायेगा I माँ I तुम माँ हो I पचास रुपैया ले लो I"[५]

उपर्युक्त सारे तथ्यों को प्रस्तुत करने के पीछे कथाकार संजीव जी का उद्देश्य यह रहा होगा कि भारतीय आदिवासी समाज में नारी की स्थिति न किसी के बराबर है I और जहाँ भी सूर्य की किरणें पहुँची हैं वे शायद प्रगति का संकेत हैं I मैना सूर्य की किरण हैं जो आदिवासी समाज के लिए प्रेरणारूप है I

हिन्दी के आदिवासी जीवन संबंधी उपन्यास साहित्य में चित्रित आदिवासियों की अर्थ व्यवस्था के नियाभक तत्वों के अंतर्गत आदिवासियों की आय के साधन, साधनों की स्थिति, उनका आर्थिक जीवन स्तर एवं आर्थिक विकास के नये चरण आदि समाविष्ट किये जा सकते हैं I

आदिवासियों का आर्थिक जीवन की उनकी भौगोलिक परिस्थिति से निर्धारित होता है I ८०प्रतिशत से अधिक प्राकृतिक वन, खनिज आदिवासी क्षेत्र में है I आस-पास के जंगल और ज़मीन, पहाड़, पानी आदि से जो कुछ मिलता है इस पर वे लोग निर्भर रहते हैं I आदिवासियों के पास आर्थिक आय के अनेक तरीके हुआ करते हैं जिसके कारण वह अपना जीवनयापन कर लेते है I किन्तु आलोच्य उपन्यास में ऐसी बातें कम दिखाई देता हैं I प्रस्तुत उपन्यास की नायिका मैना अपना जीवनयापन करने हेतु धान रोपना, कोयला ज़मीन से निकालना, बर्तन और कपड़े धोना आदि काम करती है I बाँसगड़ा के अधिकतर घरों के दरवाज़ों पर सुबह से लेकर शाम तक ताले लगे रहते हैं I अलग-अलग ऋतुओं के अनुरूप इन मज़दूरों को काम मिलता रहता हैI कुछ आदिवासी लोग भेड़ बकरियाँ पाल कर और उन्हें बाज़ार में बेचकर जीवन जीते हैं I मंगर को बाँसगड़ा का परिचय देते हुए शर्मा बाबू कहता है "साईकलों पर बोर में बांधकर भेडे और बकरे या घर के मुर्ग-मुर्गियों को बाज़ार में बेचने ले जाते हुए उसे अक्सर आदिवासी दिख जाते हैं I"[६] शर्मा बताते हैं "अभी धान की रोपनी का वक्त है – कुछ अपने खेत, कुछ मजूदूरी थोड़ी चहल पहल नज़र आ रही है I अभी ज्यादातर अवैद्ध कोयला खनन भी गड्ढों में पानी भर जाने से बन्द है I कटनी के बाद नवम्बर-दिसम्बर से चित्र बिल्कुल अलग हो जाता है I दिन में बूढों-बच्चों या कुछ औरतों को छोड़कर जो भी जवान स्त्री-पुरुष मिलेगा, ऊंधा या सोया हुआ रात भर अवैध कोयला खनन में काम करने के बाद ही वे दिन को सोना I"[७]

स्पष्ट है कि आदिवासी जीवन-समाज वर्षों से तथाकथित मुख्यधारा समाज के उपनिवेश बने हुए हैं I उल्लेखनीय है कि आज जहाँ, इक्कीसवीं सदी का भारतीय मुख्यधारा का समाज विश्व से अपना सम्पर्क-सूत्र साध रहा है, वहीं वह अपने आस-पास पसरे उपेक्षित अविकसित आदिवासी जीवन समाज की कितनी सुधि ले रहा है, यह यक्ष पक्ष्व हमारे समाज - संस्कृति – साहित्य के सम्मुख विचारणीय है I इस संदर्भ में यह जानकर सुखद लगता है कि हिंदी का एक कथाकार संजीव, अपनी पूरी दिलचस्पी के साथ भारत के एक आदिवासी क्षेत्र और जीवन की कथा को अपने

उपन्यास के केन्द्र में लाने का पराक्रम करता है I

संदर्भ

१. धार, संजीव, पृष्ठ संख्या : १५
२. हिंदी में आदिवासी जीवन केन्द्रित उपन्यासों का समीक्षात्मक अध्ययन, प्रो.बी.के कलासवा पृष्ठ संख्या : १८०
३. आदिवासी जीवन की हकीकत उपन्यासों के आईने में,डॉ.फिरोज खान पृष्ठ संख्या : १८६
४. आदिवासी एवं उपेक्षित जन, डॉ.भीमराव पिंगले,पृष्ठ संख्या : ९५
५. आदिवासी स्वर और नयी शताब्दी,रमणिका गुप्ता, पृष्ठ संख्या : १९०
६. धार,संजीव,पृष्ठ संख्या : १००
७. आदिवासी समाज और संस्कृति,शैला कदम,पृष्ठ संख्या : ८६